International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 248-250

मुन्शी प्रेमचन्द के 'उपन्यास रचना' निबंध का आदर्शपरक विश्लेषण

डॉ0 कुलवन्त सिंह
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) एम.एम.पी.जी. कालेज, फतेहाबाद, हरियाणा, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

प्रेमचन्दकालीन परिवेश का एक महत्वपूर्ण यथार्थ हिन्दु–मुस्लिम सम्बन्धों का भी है। अंग्रेज शासकों ने स्वाधीनता आंदोलन को कमजोर करने के लिए साम्प्रदायिक भावना को उभारा। बुर्जुगा वर्ग का हित भी इसी में था कि साधारण हिन्दु–मुसलमान साम्प्रदायिक झगड़ों में उलझकर मूल समस्याओं को भूले रहे। बुजुर्गा समाज और अंग्रेजाी शासकों की साजिश के परिणाम स्वरूप 1925 के बाद भारत के विभिन्न भांगों में साम्प्रदायिक दंगे हुए जिनमें हत्या, आगजनी, बलात्कार जैसी अमानवीय घटनाएं घटी। प्रेमचन्द ने अपने समकालीन जीवन के इस यथार्थ का चित्रण उपन्यासों लेखों और सम्पादकीय टिप्पणीयों में किया है। साम्प्रदायिक दंगों की अमानवीयता को चित्रित करते हुए उन्होने दिखाया है कि इन्हे उभारने में मुल्ला–मौलवियों, पंडो–पुरोहितों, दोनों साम्प्रदायों के नेताओं व्यवसासियों, अंग्रेज शासन के अधिकारियों की मिलीभगत होती है। हिन्दु समाज का आम आदमी और ग्रामीण मुसलमान समाज साम्प्रदायिक भावनाओं से अछूता होता है। कायाकल्प में चक्रधर और ख्वाजा महमूद मानवीय आदर्शो क चरित्र हैं। इस प्रकार प्रेमचन्द के उपन्यासों में समकालीन भारतीय परिवेश का यथार्थ चित्रण द्वितीय है।

'उपन्यास रचना' निबंध का आदर्शपरक विश्लेषण

'उपन्यास रचना' प्रेमचन्द का समीक्षात्मक निबन्ध है। यह 'माधुरी' के 23 अक्तूबर 1922 के अंक में प्रकाशित हुआ था। 'समालोचक' के जनवरी 1925 के अंक में प्रकाशित 'उपन्यास' उनका उपन्यास सम्बन्धी दूसरा समीक्षात्मक निबन्ध है। वे उपन्यास की सर्वसम्मत परिभाषा के बारे में कहते हें कि ऐसी कोई परिभाषा नही है। उन्होने स्वंय जो परिभाषा दी वह हैं, ''मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र समझता हूं। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व हैं।''

उपन्यास रचना सरल साहित्य नही है यह स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं कि उपन्यास लिखने में उतना ही दिमाग लगाना पड़ता है जितना किसी दार्शनिक को दर्शन शास्त्र के ग्रन्थ लिखने में।

उपन्यास की उत्पति के सम्बन्ध में वे लिखते हैं कि उपन्यास एक पश्चिमी पौधा है जो भारत वर्ष में लगाया गया है। उनका विचार है कि भारत निवासियों ने यूरोपियन साहित्य के किसी अंग को इतना ग्रहण नही किया जितना उपन्यास को। वे उपन्यास का जन्म चौदहवी प्रन्द्रहवी शताब्दी के लगभग मानते हैं। उनका कहना है कि आज यह हमारे साहित्य का अविच्छेद्य अंग हो गया है। गत पचास वर्षों में भारत की साहित्यिक शक्ति का जितना उपयोग उपन्यास रचना में हुआ इतना शायद साहित्य के और किसी भाग में नही हुआ। इस सन्दर्भ में उन्होने बंगला, गुजराती, मराठी, उर्दू के लोकप्रिय उपन्यासकारों के उदाहरण दिए। हिन्दी उपन्यास की स्थिति स्पष्ट करते हुए उन्होने लिखा कि हमारे यहां उपन्यास काल से पहले ऐसे किस्से कहानियों का प्रचार था जिनमें प्रेम और विरह के वर्णन ही प्रधान होते हैं। अक्सर किस्सों में तिलिस्म और ऐयारी के विचित्र दृश्य होते थे जिससे कुतुहल बढ़ता था। उस वक्त हिन्दी के उपन्यास का मैदान प्रायः खाली था। बाबू देवकीनन्दन खत्री के 'चन्द्रकाता संतति' की रचना हुई और वह हिन्दी में अनोखी एकदम नयी चीज थी। हिन्दी पाठक टूट पड़े और चन्द्रकांता की खूब धूम हुई। चन्द्रकांता के बाद देवकीनन्दन ने कई सामाजिक उपन्यास लिखे जिनमें उपन्यास के अंकुर मौजुद थे। उसके बाद जासूरी उपन्यास निकले जो अधिकांश यूरोपियन जासूसी कथाओं के अनुवाद होते थे। तब जासूरी उपन्यास की खूब धूम रही, इसी बीच बंगाल उपन्यासों का रेला शुरू हुआ।

उपन्यास–रचना निबंध में उन्होने उपन्यास की सरंचना में रचना प्रक्रिया और तत्वों के सन्दर्भ में विचार किया है। सर्वप्रथम उपन्यास की बुनियाद के लिए उन्होने रूचि और प्रकृति के अनुकूल विषय निर्धारण की बात कही है। उसके बाद प्लांट की चिंता में लेखक सोते जागते डूबा रहता है। उपन्यास की इस बुनियाद के बाद भवन खड़ा करने के लिए मसाले की आवश्यकता का अनुभव होता है। इसके मुख्य साधन उन्होने निम्नलिखित माने हैं। 1. अवलोकन, 2. अनुभव, 3. स्वाध्याय 4. अन्तदृष्टि 5. जिज्ञासा 6. विचार–आकलन

1. **अवलोकनः** प्रेमचन्द ने उपन्यास के लिए सूक्ष्म अवलोकन शक्ति को प्रथम साधन माना। इसके लिए मार्कट्वेन के अतिरिक्त अन्य रचनाकारों के भी उदाहरण दिए जिन्होने अवलोकन के लिए उस क्षेत्र के अनुभव स्वंय प्राप्त किए। लेकिन मनोभावों के वर्णन में कल्पना शक्ति से मदद लेने के लिए भी कहा।

2. **अनुभवः–** इस सम्बन्ध में प्रेमचन्द मनाते है कि अन्य प्राणियों के मनोभावों को व्यक्त करने के लिए अपने भावों को टटोलना जरूरी है। उपन्यास की सफलता के लिए अनुभव को उन्होने सर्वप्रधान तन्त्र माना है। वे चाहते हैं कि उपन्यास को यथासाध्य नये नये दृश्यों को देखने और नये नये अनुभवों को प्राप्त करने का कोई अवसर हाथ से न जाने देना चाहिए।

3. **स्वाध्यायः** प्रेमचन्द का कहना है कि स्वाध्याय से उपन्यासकार को बड़ी मदद मिलती है। उन्होने स्वंय फ्रैंच, रूसी आदि भाषाओं के उपन्यासों का अध्ययन अंग्रेजी अनुवादों के माध्यम से किया। उर्दू, बंगाल, गुजराती, मराठी उपन्यासों का भी अध्ययन किया। वे लिखते हैं कि स्वाध्याय का उद्देश्य यह नही होना चाहिए कि कुशल लेखक के भाव और विचार उड़ाए जाएं बल्कि अपने भावों और विचारों की अन्य लेखकों से तुलना की जाए और उससे अच्छी रचना के लिए अपने को प्रोत्साहित किया जाए। उनका स्पष्ट मत है कि उपन्यास लेखक को विविध साहित्य का भलिभांति अध्ययन किए बिना कलम नही उठानी चाहिए। उनका विचार है कि तुलना और

स्वाध्याय से हमें अपनी त्रुटियों का बोध होता है हमारी बुद्धि विकसित होती है और इन साधनों की झलक मिल जाती है जिनके द्वारा किसी बड़े लेखक ने सफलता प्राप्त की।

4. **अन्तर्दृष्टिः** इस साधन के लिए उन्होने फिलिप सिडनी को उद्धरित कियाः– "अपनी निगाह अपने हृदय में डालों और जो कुछ देखो लिखो।" प्रेमचन्द का कहना है कि लेखक अपने को कल्पना के द्वारा जितनी ही भिन्न भिन्न परिस्थितियों में रख सकता है उतना ही सफल मनोरथ होता है। इसके लिए उन्होने उदाहरण दिया तुलसीदास द्वारा वर्णित पुत्रशोक का।

5. **जिज्ञासाः** प्रेमचन्द का विचार है कि विद्यार्थी को ज्ञान बढाने के लिए जितनी जिज्ञासा की जरूरत हाती उतनी ही लेखक को भी होनी चाहिए। इस सन्दर्भ में उन्होने डी.एल. राय और फ्रांसिस बेकन की जिज्ञासु वृति का उदाहरण दिया।

6. **विचार आकंलनः–** इसके लिए उन्होने सुझाव दिया कि लेखक में ऐसे गुण की आवश्यकता है जो भावों और दृश्यों को स्मृति पट पर अंकित कर ले। जिन्हे अपनी स्मरण शक्ति पर विश्वास नही उन्हे नोट बुक या डायरी साथ रखने की सलाह देते हैं।

प्रेमचन्द ने 'प्लॉट और 'चरित्र' को उपन्यास के प्रमुख तत्व माना और उनके विषय में विस्तार से विचार किया है। प्लॉट के चिंतन के सम्बन्ध में उन्होने चार्ल्स डिकेन्स, थैकरे, जार्ज सैन्ड फ्रांस, वाल्टर स्कॉट आदि विदेशी उपन्यासकारों को उदाहरण दिए। सरलता, मौलिकता और रोचकता को उन्होने अच्छे प्लॉट की विशेषताएं बताई हैं। सरल प्लॉट में थोड़े चरित्रों के आचार व्यवहार का सूक्ष्मता से दिखाया जा सकता है। प्लॉट में ताजगी और अनोखेपन के गुण से मौलिकता का आना वे स्वाभाविक मानते हैं। उनका कहना है कि मौलिक प्लांट रोचक अवश्य होता है
चरित्र को उदघाटित करना ही उपन्यास का मूल तत्व है। अतः उन्होने चरित्र के भिन्नत्व में अभिन्नतत्व दिखाना लेखक का लक्ष्य माना। लेखक का चरित्र का अध्ययन जितना ही सूक्ष्म और विस्तृत होगा उतना ही वह सफल होगा। इसी दृष्टिकोण के आधार पर उन्होने उपन्यासकारों के दो वर्ग माने आदर्शवादी और यथार्थवादी। आदर्शवादी हमें ऐसे चरित्रों से परिचित कराता है जिनके हृदय पवित्र होते हैं जो स्वार्थ और वासना से रहित होते हैं। जो साधु प्रकृति के होते हैं। आदर्शवादी गर्म कोठरी में काम करते करते थकने वालों को बाग में ले जाकर निर्मल स्वच्छ हवा खिलाते हैं लेकिन आर्दशवादियों के लिए खतरे की शंका प्रकट करते हैं। कि उनके पात्र सिद्धान्तों की मूर्ति मात्र न बन जाएं। यथार्थवादी पात्रों के चरित्रों को पाठक के सामने उनके यथार्थ नग्न रूप में रख देता है। यह हमारी दुर्बलताओं, विषमताओं और क्रूरताओं का नग्न चित्र होता है। इसकी कमी यह है कि यथार्थवादी हमें निराशावादी बना देता है। दोनों की तुलना करते हुए उन्होने लिखा यथार्थवादी हमारी आंखें खोलता है तो आदर्शवादी हमें उठाकर किसी मनोरम स्थान में पहुंचा देता है। प्रेमचन्द का निष्कर्ष है कि उच्च कोटि के उपन्यास वही है जहां आदर्शवाद और यथार्थवाद का समन्वय हो गया है। आदर्श को सजीव बनाने के लिए यथार्थ का उपयोग होना चाहिए। कमजोरियां चरित्र को मनुष्य बना देती हैं निर्दोष चरित्र देवता हो जाएगा। उपन्यासकार की सफलता और विशेषता यही है कि वह ऐसे चरित्रों की दृष्टि करे जो अपने सद्व्यवहार और सद्विचार से पाठक को मोहित कर लें। साहित्यकार का पद समाज में कहीं ऊंचा है जो हमारा पथ–प्रर्दशक होता है जो मनुष्यत्व को जगाता है।, सदभावों का संचार करता है और हमारी दृष्टि को विस्तृतम करता है।
उपन्यास रचना निबंध में प्लॉट की कल्पना के प्रेमचन्द ने निम्नलिखित छः भेद माने।

1. **कोई अदभुत घटनाः** प्रकृति के नियमों के विरूद्ध कहानी अदभुत होती है। इनका उद्देश्य केवल पाठकों का मनोरंजन होता है। प्राचीन ऋषियों ने दृष्टांतों द्वारा जनसाधारण को उपदेश दिए हैं। स्विफट की 'गुलिवर की यात्रा' में अदभुत घटनाओं का सहारा लेकर समाज पर व्यंग्य किया गया है।

2. **गुप्त रहस्यः** जासूसी उपन्यास इसी श्रेणी में आते हैं। लेखन का कौशल इस बात में है कि जिस चरित्र को पाठक और लेखक दोषी समझते हों वह अंत में निरपराध सिद्ध हो जाए। ऐसे उपन्यास अत्यंत रोचक होते हैं और इनसे बुद्धि तीव्र होती है। इंग्लैंड के कॉनन डायल, फ्रांस के मार्स लेब्लांक और अमरीके के एलन पो सिद्धहस्त है।

3. **मनोभाव का चित्रणः** मनोभाव प्रधान उपन्यासों में लेखक ऐसी घटनाओं की योजना करता है जिनमें चरित्रों को अपने मनोभाव प्रकट करने का अवसर मिले। घटनाएं कम होती है पात्रों के विचार अधिक। ऐसे उपन्यास लिखना लोहे के चने चबाना है। उपन्यासकार को नित्य अपने अंतर की ओर ध्यान रखना पड़ता है। जॉर्ज इलियट के उपन्यास इसी श्रेणी के हैं।

4. **चरित्र विश्लेषण और 5. जीवन के अनुभवों को प्रकट करनाः** इन दोनों प्रकारों को लेखक ने समन्वित रूप से विश्लेषित किया है। उनका कहना है कि इन दोनों प्रकारों के उपन्यास लिखने के लिए लेखक में दिव्य कल्पना शक्ति के साथ अवलोकन और निरीक्षण की भी प्रचुर मात्रा हो। इसी सन्दर्भ में कहा गया है कि लेखक को सभी श्रेणियों के मनुष्यों से मिलना–जुलना आवश्यक है और उसे अपनी आंखें और कान सदैव खुले रखने चाहिए। उसे प्राकृतिक दृश्यों और विचित्र घटनाओं का बड़े ध्यान से अवलोकन करना चाहिए।

5. **सामाजिक या राजनीतिक सुधारः** इस विषय में प्रेमचन्द का कहना है कि सभी भाषाओं में आजकल 'सुधार–सुधार' के घोर नाद से सारा वायुमण्डल निनादित हो रहा है। सोधेश्यता विववादस्पद विषय है और प्रवीण समालोचकों की राय में साहित्य का उद्देश्य केवल भाव चित्रण ही होना चाहिए। गत शताब्दी में पाश्चात्य देशों में हुए सुधार उपन्यासों के ही परिणाम है। प्रेमचन्द का कहना है कि सुधार के जोश में कथा की रोचकता कम न होने पाए।

प्रेमचन्द अपने वर्तमान हिन्दी उपन्यासों से निराश है और उन्होने उपन्यास लेखकों को अपना कर्तव्य याद दिलाया कि वे उपन्यास साहित्य के मुख को उज्ज्वल करें बदनामी के दाग को मिटा दें।
उपन्यास निबंध के अंत में ।तजे वित ।तजे ैम सिद्धान्त के विषय में प्रेमचन्द के विचार में अन्तर्विरोध स्पष्ट हुआ है। इसी असंगति के साथ उन्होने उपन्यास की सोद्देश्यता और श्रेष्ठता पर विचार करते हुए लिखा है, "मौलिक प्रवृतियों की छटा दिखाना ही उपन्यास साहित्य का परम उद्देश्य है।" इस असंगति के सम्बन्ध में डा. रामविलास शर्मा ने लिखा है "प्रेमचन्द को एक तरफ सामंती पूंजीवादी विचारधारा खींचती है, दूसरी तरफ उनकी सहृदयता उनका सामाजिक ज्ञान उन्हे साहित्य से समाज को बदलने की

तरफ खींचता है। इस द्वन्द्व को यह विचार जगत में उतना हल नही कर पाए जितना अपने कथा साहित्य में। उनकी कला पर दिन ब दिन यथार्थवाद का रंग चढ़ता गया और उनका साहित्य राष्ट्रीय और जातीय उत्थान का साहित्य बन गया।"

सन्दर्भ

1. डॉ. शील कौशिक 'एक सच यह भी' पृष्ठ संख्या 08
2. वही पृष्ठ संख्या–07
3. वही पृष्ठ संख्या–07
4. वही पृष्ठ संख्या–07
5. वही पृष्ठ संख्या–24
6. वही पृष्ठ संख्या–32
7. वही पृष्ठ संख्या–38
8. वही पृष्ठ संख्या–39
9. वही पृष्ठ संख्या–56
10. वही पृष्ठ संख्या–78
11. वही पृष्ठ संख्या–108
12. वही पृष्ठ संख्या–23
13. वही पृष्ठ संख्या–27
14. वही पृष्ठ संख्या–66
15. वही पृष्ठ संख्या–108